ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

मृणाल पाण्डे जी की कहानियों में अभिव्यक्त बालमन

डॉ. संध्या-एस

पोस्ट डोक्टरल फेलो
हिंदी विभाग
कोच्चिन विश्वविद्यालय
Sandhyasuresh30@gmail.com

आज से लगभग अर्द्धशती पूर्व कहानियों की मोहक- निराली दुनिया सामान्यत: हर बच्चे को उपलब्ध थी। बच्चे भी पूरे चाव और अधिकार भाव के साथ अपना हक वसूलने में सक्षम थे। तेज़ी से बढ़ते इस वैज्ञानिक दौर में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी किसी एक अद्भुत दुनिया में जीने के लिए विवश हो गये हैं। ज़िंदगी को सुख-सुविधापूर्वक बनाने की दौड़ में मूल्य में च्युति हम देख सकते हैं। बच्चों की दुनिया आज बहुत बदल गयी है। कभी खेल-खिलौने, मेले-ठेले और त्योहारों तक उनकी खुशियाँ सीमित थीं, पर आज कम्प्यूटर के माउस के साथ खेलती उंगलियाँ न जाने कितना कौतुक लोक रच डालती हैं, पर माता-पिता की यांत्रिक ज़िंदगी के चलते सुख-सुविधाओं के अम्बारों के बीच बच्चा अकेला होता है।

बच्चे के समकालीन जीवन के बहुरंगी दृश्यों को आधार बनाकर हिंदी में बहुत अच्छी बाल कहानियाँ लिखी गयी हैं। आज की हिंदी कहानी के बच्चों की दुनिया में हर रंग, हर छवि, हर भाव भंगिमा और हर तेवर शामिल हैं। समकालीन हिंदी रचनाकारों में मृणाल पाण्डे की खास पहचान है। उन्होंने ज़िंदगी को नज़दीक से देखने, अनुभव करने और जीवन संस्पर्श से उसकी सजीव एवं सशक्त अभिव्यक्ति साहित्य में देने की कोशिश की है। उनका रचना-संसार बहुत व्यापक है, लेकिन वे मूलत: मीडिया पर्सन हैं। नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता, आलोचना खास तौर पर स्त्री विमर्श आदि सभी विधाओं में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है। महज रचनाकार के रूप में नहीं, समाज सेविका के रूप में उनका खास महत्व है।

मृणालजी की कहानियाँ कहानी-कला की दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ हैं। उनकी कहानियाँ अपने परिवेश को व्याख्यायित करती हैं। मृणालजी की कहानियों के प्रमुख संकलन हैं ; दरम्यान, शब्दबेदी, एक नीच ट्रैजेडी, एक स्त्री का विदागीत, यानी की एक बात थी, बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, और चार दिन की जवानी तेरी।

मृणालजी ने अपनी कहानियों में बाल-मन की आकाक्षाओं और बच्चों के मानसिक तनावों का भी चित्रण किया है। परिवारवालों के बीच होने वाले संघर्ष का फल बच्चों को ही भोगना पड़ता है। आधुनिक दौर में बच्चों की मानसिकता में भी बदलाव आ गया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण बच्चे भी स्वतंत्र होकर सोचते हैं। माँ-बाप भी बच्चों को खुश रखने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। अधिक धन की प्राप्ति होने से युवा पीढ़ी या बच्चे दिशाहीन हो जाते हैं। माँ-बाप के बीच के संघर्ष और झगड़े तलाक तक पहुँचा देते हैं। माँ-बाप के बीच का अलगाव बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। बच्चे के पालन में माँ और पिता का साथ हमेशा होना चाहिए।

'रूबी' कहानी में उच्चवर्गीय किशोर मन की व्यथा और बनावटी ज़िंदगी के रुग्ण - रूपों से साक्षात्कार होता है। रूबी एक छोटी सी बच्ची है। उसके पिता के तबादले की वजह से पहाड़ी क्षेत्र में आयी है। वह अमीर घर की लड़की है, उसे घर से बाहर निकलने नहीं देते हैं। रूबी अकेले रहते-रहते अनमनी या उदास होती थी। माँ-बाप के बीच हमेशा झगड़ा देखने के कारण वह अकेलेपन में ही रहना चाहती है। लेखिका ने इसमें इस बच्ची की मनोव्यथा को दर्शाया है। रूबी जैसी कई लड़कियाँ हमारे समाज में पायी जाती हैं जो अपने घर के वातावरण से परेशान हैं। उनके मानस पर घरेलू झगड़े का असर पड़ता है कभी-कभी पागल हो जाती है। "हर खाने के साथ-साथ उसे आयरन, मल्टी विटामिन, कैल्शियम वगैरह, जाने किस-किस चीज़ की गोलियाँ निगलनी होती थीं, पर इसके बावजूद उसका दुबला चेहरा वैसा ही पीला, उदास और कुम्हलाया सा रहता। अम्मा का कहना था कि अगर दवाइयों की गोलियों के बजाय वे लोग रूबी को खुली हवा में आने और हँस-बोलने का मौका दें तो चार दिन में लड़की का कायापलट हो जाये।"[1]

समाज में लड़की और लड़कों के प्रति भेदभाव देखने को मिलता है। बचपन से ही लड़कियों को दबा कर रखा जाता है। मृणाल जी की 'लड़कियाँ' शीर्षक कहानी में छोटी-सी बच्ची के प्रतिशोध को व्यक्त किया गया है। माँ भी हमेशा उसे मुसीबत के रूप में देखती है। नानी के घर जाने वाली लड़की के मन में वहाँ के लोगों द्वारा दिखाये गये भेद-भाव से घृणा उत्पन्न हो जाती है। नानी मामा के लड़के को गोद में बिठाकर कहानी सुनाती है। लड़की उस समय वहाँ आ जाती तो नानी उसे पैर छूने का आदेश देते हुए कहती है कि "मुझ से कहा गया कि पैर छुओ, ऐसे नहीं ऐ.. से.. अरे लड़की का जनम है और ज़िंदगी भर झुकना है तो सीख ही लो।"[2] अष्टमी के दिन लड़कियों को लेकर पूजा करती है। माँ और नानी के सामने प्रतिशोध व्यक्त करते हुए वह कहती है -"मुझे नहीं चाहिए इन औरतों का हलवा-पूरी, टीका रुपया मैं

देवी नहीं बनूँगी !"[3] लेखिका ने इसमें आज की बच्ची की मानसिकता को दर्शाया है। साथ ही साथ परंपराओं के प्रति लड़की के विद्रोह व प्रतिशोध को दिखाया है।

'कुन्नु' कहानी में भी 'कुन्नु' की मानसिक व्यथा को व्यक्त किया गया है। कुन्नु छोटी सी लड़की है। उसके मन में अनेक प्रकार के प्रश्न उठते हैं। उसका उत्तर उसे किसी से नहीं मिलता है। वह चिड़ियों के साथ खेलना पसंद करती है। लड़की होने के कारण हमेशा प्रश्न करने से माँ टोक लेती है। बाल मन की जिज्ञासा को दबाकर रखने से उत्सुकता बढ़ती जाती है। कहानी में कुन्नू की किशोर अवस्था से लेकर सयानी होने तक की मानसिकता को दर्शाया गया है। वह अकेला खुले वातावरण में चलना चाहती है। अपने मन को पूरी तरह न समझ पाने के कारण वह भी माँ-बाप से दूर होना चाहती है।

'खेल' कहानी में बच्चों की मानसिकता को दर्शाया गया है। अमीर घर का बच्चा हमेशा गरीब घर के बच्चों को नौकर बनाकर खेल खेलता है। बाल मन का चित्रण लेखिका ने सूक्ष्मता के साथ दर्शाया है। यह कहानी मालिक बच्चे के बीच खेल,संवादों के ज़रिए घटित होती है। मालिक का बच्चा 'परताप' खुलकर बताता है – "क्यों नहीं ? आदमी का बच्चा आदमी और नौकर का बच्चा नौकर!"[4]

माँ-बाप के कुसंस्कार का असर बच्चों पर पड़ता है। 'लक्का-सुन्नी' कहानी में अनाथ हो गयी बच्ची की मानसिकता को दर्शाया गया है। अमृता नानी के साथ रहती है। उसकी माँ कैंसर रोग से ग्रस्त है। वह अपने इच्छानुसार विवाह करके विदेश में रहती है। पति नशीली वस्तुओं का उपयोग करके मृत्यु का वरण करता है। कैंसर रोग के कारण माँ भी घर आना नहीं चाहती। बच्ची को नानी के पास सौंप कर उसकी भी मृत्यु होती है। बच्ची भी देश को पसंद करने में असमर्थ निकलती है। वह हमेशा अपने काल्पनिक जगत में लक्का-सुन्नी नामक दोस्तों से खेलती है। वह हमेशा अकेले खेलना चाहती है। माँ-बाप की मृत्यु का बुरा असर उस पर पड़ता है। फिर उसे घुटन भरी और तनावग्रस्त ज़िंदगी बितानी पड़ती है।

'एक पगलाई सस्पेंस की कथा' में विष्णु प्रिया नामक अनाथ लड़की की मानसिकता का चित्रण भी लेखिका ने किया है। माँ-बाप की मृत्यु के बाद उसे रिश्तेदार के फार्म हाउस में लाया जाता है। वहाँ नौकरों के बीच उसकी सारी ज़िंदगी गुज़रती है। वह कुत्तियों के साथ खेलती है। कहानी के अंत में सयानी होती विष्णु प्रिया आत्महत्या करती है।

सौतेली माँ की पीड़ा सहने वाली बच्चे की कहानी है 'अब्दुल्ला'। वह एक ओर गरीबी से त्रस्त है तो दूसरी ओर सौतेली माँ की पीड़ा से। बिन्नो उसका दोस्त है। दोनों अल्ला मिया से दुआ माँगते हैं। "अब्दुल्ला की सौतेली माँ को कीड़ा पड़ जाएँ, उसे कोढ़ चकरी फूटे, नाक सड़ के सड़ा टमाटर हो जाए, दीदे फूट जाएँ, और तब बस इस्टाप पर वो नाक से गुँगुआ-गुँगुआ के भीख माँगे।"[5] भारतीय समाज में सौतेली माँ का प्रताड़ना सहने वाले कई बच्चे हैं। ऐसे एक बच्चे की मानसिकता को अब्दुल्ला' में दर्शाया गया है। पिता से भी वह नफरत करता है। 'हिर्दा मेयो की मंझला' कहानी में गरीब बच्चे का कम उम्र में नौकरी करना और पढ़ाई से वंचित रहना,हमेशा अनमना सा रहना या बेजान रहना आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

'बर्फ' कहानी में माँ-बाप के झगड़े के बीच पड़ते बच्चों की मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है। हमेशा झगड़ा देखने वाले बच्चों के मन में भी भय और अन्याय करने की चिंता होती है। इसमें लेखिका ने तीन बच्चों की मानसिकता का चित्रण बखूबी से किया है। तीनों बच्चे परेशान हैं। यहाँ तक माँ-बाप से बातें करने के लिए डरते हैं। पति के अत्याचारों से परेशान स्त्री अपना गुस्सा बच्चों पर उतारती है। इस प्रकार करने से बच्चे भी माँ से नफरत करने के लिए प्रेरित होते हैं। 'हमसफर' कहानी की माँ भी अपना सारा क्रोध और परेशानी बेटे पर उतारती है। बेटे को मारकर वह अपनी पीड़ा को कम करती है। इसमें बच्चों की दर्दनाक स्थिति का दयनीय चित्रण हुआ है।

उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से मृणालजी ने बाल मन का जीता जागता चित्र उकेरा है। आज के समाज में बच्चे किस हद तक सुरक्षित हैं ? इस प्रश्न पर गंभीरता के सोचने के लिए उन्होंने पाठकों को बाध्य किया है। लेखिका ने कई मुद्दों को पेश करके उस बात पर सोच-विचार करने या सजग एवं जागृत रहने का आह्वान दिया है। बच्चों का व्यक्तित्व निर्माण दरअसल घर या परिवार मे ही होना चाहिए । साथ ही साथ पारिवारिक वातावरण और निकट संबन्धियों का विचारशील होना भी आवश्यक है। बच्चों के संपूर्ण विकास पर उसके चारों ओर का वातावरण प्रभाव डालता है। वातारवण में होने वाले छोटे से परिवर्तन का असर बच्चों पर भी पड़ता है। वह जिस वातावरण में पलता है उसके अनुसार व्यवहार बदलता है। वह समाज में अपने परिवार के सदस्यों यथा माता-पिता, भाई-बहन व अन्य सगे-सम्बंधियों के साथ रहता है। अगर परिवार का माहौल व खान-पान उचित होता है तो बच्चे का विकास उचित होगा। अगर परिवार का वातावरण सदूषित है तो इसका प्रभाव भी बच्चे के विकास पर पड़ता है। तेज़ी से बढ़ते इस युग में बच्चों की मानसिकता किस प्रकार बदल गयी है, इसका चित्रण लेखिका ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी कहानियों के ज़रिए समकालीन सामाजिक यथार्थ का खुलासा पाठकों के

सामने पेश किया है। बाल मन के असली चित्रण के कारण भी हिंदी कहानी जगत में मृणाल पाण्डेय का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

संदर्भ :

1. मृणाल पाण्डे - यानि की एक बात थी :- पृ. 174
2. मृणाल पाण्डे - चार दिन की जवानी तेरी : पृ. 15
3. वहीं – पृ. 19
4. मृणाल पाण्डे - यानि की एक बात थी : पृ. 226
5. मृणाल पाण्डे - चार दिन की जवानी तेरी: पृ. 88

सहायक ग्रंथ :

1. मृणाल पाण्डे - चार दिन की जवानी तेरी
2. मृणाल पाण्डे - यानि की एक बात थी
3. डॉ. वेद प्रकाश- बाल अध्ययन –बच्चे और बचपन
4. सं. उषा यादव / राजकिशोर सिंह- हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श